गडहिंग्लज

नवंबर १९९२

## - प्रमाण - पत्र -

प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री लीना बाबूराव बेळगुद्री जी ने एम. फिल. उपाधि के हेतु "देशविभाजन सम्बन्धी उपन्यासों में चित्रित विभाजन की समस्या का तुलनात्मक अध्ययन" ["और इन्सान मर गया", "झूठा - सच" तथा "तमस" के विशेष संदर्भ में। ] विषय पर मेरे निर्देशन में काम किया है। आपकी शोध - पद्धति एवं लेखन - विधि से मैं आद्योपांत परिचित हूँ।

मेरी संस्तुति है कि प्रस्तुत प्रबंधिका एम. फिल. उपाधि के हेतु प्रस्तुत की जाए।

डॉ. सुधाकर गोकाककर,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
शिवराज महाविद्यालय,
गडहिंग्लज ४१६५०२
[जि. कोल्हापुर - महाराष्ट्र राज्य]

[डॉ. सुधाकर गोकाककर ]

[कु. लीना बाबूराव बेळगुद्री]
गडहिंग्लज

## * प्राक्कथन *

** विषय का चुनाव :-

आज देश की सामाजिक और राजनैतिक परिस्थिति को देखकर, यथासम्भव ऐतिहासिक यथार्थ को प्रस्तुत करने के लिये मैंने इस विषय का चुनाव किया है।

भारत - विभाजन के समय देश का जो राजनैतिक विभाजन हुआ था वह सन् १९४७ ई. में ही समाप्त नहीं हुआ। उसका इतना गहरा प्रभाव हिन्दू और मुसलमानों पर पड़ा है कि, आज भी घृणा, द्वेष, अविश्वास के भाव जब तब जागृत हो उठते हैं और देश की शान्ति को नष्ट कर देते हैं।

इस विषय का सबसे पहले आकर्षण मुझे तब हुआ था जब मैं बी.ए. के अंतिम वर्ष में पढ़ती थी उसी वर्ष "तमस " को धारावाहिक के रूप में दूरदर्शन पर चित्रित किया गया था। और आगे एम. ए. की पढ़ाई के लिये भी वही उपन्यास था। उसमें चित्रित विभाजन समस्या की तीव्रता ने मुझे प्रभावित किया और जब मैंने प्रस्तुत प्रबन्ध के लिये "तमस" पर लिखने की सोची उस समय हमारे निर्देशक जी ने कहा कि इससे भी सूक्ष्म गहरा चित्रण और दो कृतियों में किया गया है वे हैं - रामानंदसागर लिखित "और इन्सान मर गया", यशपाल कृत "झूठा - सच" मेरा मूल उद्देश्य तो "देश - विभाजन की समस्या" का सम्यक् रूप से अध्ययन करना था इसलिये मैंने इन तीनों कृतियों को अध्ययन के लिये चुना।

आलोच्य उपन्यासों में विभाजन की समस्या का इतना गहरा तथा सशक्त चित्रण किया गया है कि मुझे विभाजन के समय की सभी परिस्थितियों का ऐतिहासिक आधार पर परिचय हो गया। हिन्दू - मुस्लिम संघर्ष, शरणार्थी समस्या, उनका निराकरण, कॉंग्रेस का शासन, विभाजन से उत्पन्न विषम परिस्थितियाँ, उनके निराकरण के लिये कॉंग्रेस का प्रयास आदि का आलोच्य उपन्यास में सूक्ष्म, मार्मिक चित्रण हुआ है।

** अध्यायों का विभाजन :-

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध छः अध्यायों में विभक्त है। "देश - विभाजन की समस्या" का सम्यक् रूप में अध्ययन करने के लिये प्रथम उस काल की ऐतिहासिक परिस्थितियों का देखना जरूरी है इसलिये हमने प्रबन्ध के प्रथम - अध्याय में विभाजन के काल की परिस्थितियों का चित्रण किया है।

तुलना के बिना किसी भी साहित्य की आलोचना पूरी नहीं होती इसलिए प्रबन्ध के द्वितीय - अध्याय में तुलनात्मक अध्ययन की पद्धतियाँ देखी गयी हैं। तुलनात्मक अध्ययन का मुख्य उद्देश्य तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप विषय के साम्य - वैषम्य का निरूपण होता है।

विभाजन सम्बन्धी आलोच्य उपन्यासों का अध्ययन करते वक्त विभाजन सम्बन्धी अन्य उपन्यासों का संक्षिप्त सर्वेक्षण भी आवश्यक है। इसलिये प्रबन्ध के तृतीय - अध्याय में आलोच्य उपन्यासों को छोड़ विभाजन - सम्बन्धी अन्य उपन्यासों का सर्वेक्षण किया गया है।

प्रस्तुत प्रबन्ध के चौथे - अध्याय में "और इन्सान मर गया", "झूठा - सच" तथा "तमस" आदि में चित्रित विभाजन की समस्या का यथार्थ, सजीव चित्रण को प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत प्रबन्ध के पाँचवें - अध्याय में आलोच्य उपन्यासों में चित्रित विभाजन के समय की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियों का ऐतिहासिक आधार पर साम्य - भेद, विशेषताएँ आदि का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

और प्रबन्ध के छठे - अध्याय में विभाजन सम्बन्धी उपन्यासों में आलोच्य उपन्यासों का स्थान निर्धारित किया गया है। आलोच्य उपन्यासों में विभाजन पूर्व तथा विभाजन के बाद की सम्पूर्ण स्थितियों का ऐतिहासिकता के आधार पर यथार्थ चित्रण प्रस्तुत है।

प्रथम मैं यहाँ अपने निर्देशक श्री. डॉ. सु.गो. गोकाककर जी के प्रति कृतज्ञता एवं आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने न केवल अपना बहुमूल्य समय देकर बल्कि साथ ही असीम स्नेह प्रदान करके अपनी विलक्षण प्रतिभा से निर्देशन करके लिखने की प्रेरणा दी।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर, का भी मैं आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने अपनी सेवा प्रस्तुत करने का मुझे मौका दिया। शिवाजी विश्वविद्यालय ग्रंथालय, शिवराज महाविद्यालय ग्रंथालय, राजाराम महाविद्यालय ग्रंथालय, हिन्दी राष्ट्रभाषा सभा पुणे आदि का भी मैं आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने मेरी पूरी सहायता की है।

टंकलेखन के विषय में मुझे येसादे जी ने पूरा सहयोग देकर कम - से - कम समय में प्रस्तुत प्रबन्ध को अच्छा टंकलेखित किया है मैं उनका भी आभार प्रकट करती हूँ।

०००

## -: अनुक्रमणिका :-


| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १. | पहला | - अध्याय -"विभाजन के कारण की परिस्थितियाँ" | पृ. ७ | से |
| | | | पृ. २६ | तक |
| २. | दूसरा | - अध्याय - "तुलनात्मक अध्ययन की पद्धतियाँ | पृ. २७ | से |
| | | | पृ. ३६ | तक |
| ३. | तिसरा | - अध्याय -"विभाजनसम्बन्धी उपन्यासों का संक्षिप्त सर्वेक्षण" | पृ. ३७ | से |
| | | | पृ. ५४ | तक |
| ४. | चौथा | - अध्याय - "और इन्सान मर गया"में चित्रित विभाजन की समस्या, "झूठा - सच" में चित्रित विभाजन की समस्या, "तमस" में चित्रित विभाजन की समस्या - | पृ. ५५ | से |
| | | | पृ. १२७ | तक |
| ५. | पाँचवा | - अध्याय- "आलोच्य उपन्यासों में चित्रित विभाजन की समस्या का तुलनात्मक अध्ययन, साम्य - भेद, विशेषताएँ आदि। | पृ. १२८ | से |
| | | | पृ. १७३ | तक |
| ६. | छठा | - अध्याय- "विभाजन - सम्बन्धी उपन्यासों में आलोच्य उपन्यासों का स्थान" | पृ. १७४ | से |
| | | | पृ. १७८ | तक |

* उपसंहार -

* संदर्भ ग्रन्थ-सूची -